मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2021-23 /R.N.I. No. 2022007062

आज़ाद नगर में चोरी और सीनाजोरी 2
डेंगू से बचाव के लिए सावधानी बरतें नागरिक 4
क्या सब कुछ ख़त्म हो गया है? 5
पुलिस पर स्वयं दंगाई होने का आरोप 6
ईएसआई मेडिकल कॉलेज अस्पताल का सत्यानाश 8

वर्ष 37 | अंक -41 | फरीदाबाद | 27 अगस्त-2 सितम्बर 2023 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

लूट कमाई से फुरसत मिले तब तो करें निरीक्षण

शहर में नकली और घटिया खाद्य सामग्री बनाने-बेचने वालों पर एफएसएसएआई मेहरबान

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) शहरवासी खाद्य सामग्री के नाम पर ज़हर खा लें या घटिया खाकर बीमार हो जाएं, लूट कमाई कर जेबें भरने में मशगूल भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) के अधिकारियों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। पड़े भी क्यों, दुकानदारों से महीने की खर्ची वसूलने के साथ पर्व-त्यौहारों पर अधिकारियों के घर मिठाई पहुंचाने के लिए पर्ची जारी करेंगे तो फिर उन्हें भी जनता को लूटने के लिए नकली, घटिया और मिलावटी सामग्री बेचने की छूट देना तो बनती है। धीरज नगर में चल रही नकली सोया चाप बनाने की फैक्ट्री एक उदाहरण है, इस तरह की सैकड़ों फैक्ट्रियां, दुकानें इन अधिकारियों की देखरेख में धड़ल्ले से चल रही हैं।

नागरिकों को असली, बिना मिलावट और उम्दा खाद्य सामग्री उपलब्ध हो यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी एफएसएसएआई की है। बावजूद इसके, अधिकारी कोई कार्रवाई नहीं करते। बीते सप्ताह मुख्यमंत्री उड़न दस्ते ने पल्ला क्षेत्र के धीरज नगर में नकली सोया चाप बनाने वाली फैक्ट्री पर छापा डाला। काम तो एफएसएसएआई का था लेकिन खर्ची बंधी होने की वजह से उन्हें यह फैक्ट्री नजर नहीं आती थी। सीएम फ्लाइंग स्क्वाड के अधिकारियों की सूचना पर पहुंचे फूड एंड सेफ्टी ऑफिसर सचिन शर्मा ने सैंपलिंग करने और मालिक को लाइसेंस जमा करवाने का फरमान सुना कर औपचारिकताएं पूरी कीं।

फैक्ट्री का लाइसेंस होना इसका सुबूत है कि एफएसएसएआई अधिकारियों को इसकी जानकारी है, बावजूद इसके, उन्होंने कभी यह देखने की जहमत नहीं उठाई कि यहां चाप बनाने में सोयाबीन की जगह घटिया मैदे और गंदे पानी का इस्तेमाल हो रहा है। जो काम उन्हें करना चाहिए था वो मुख्यमंत्री उड़न दस्ते को करना पड़ा।

इस तरह की जहरीली और घटिया खाद्य सामग्री धीरज नगर के साथ शहर में अनेकों जगहों पर बनाई जा रही हैं। एक साल पहले भी शहर में नकली सोया चाप बनाने की फैक्ट्री पकड़ी गई थी। बीते वर्ष ही सीएम फ्लाइंग दस्ते ने सूरजकुंड क्षेत्र में नकली देसी घी बनाने की फैक्ट्री पकड़ी थी। इन दोनों ही मामलों में एफएसएसएआई अधिकारी जांच

पृथ्वी सिंह, जिला अभिहित अधिकारी

के लिए सैंपल भेजने और नोटिस जारी करने की औपचारिकता के बाद शांत बैठ गए, दोषियों के खिलाफ कोई कार्रवाई आज तक नहीं की गई।

जानकार बताते हैं कि सैंपलिंग करना भी मैच फिक्सिंग से ज्यादा कुछ नहीं, अधिकारियों को प्रति माह कम से कम पांच खाद्य सामग्रियों की सैंपलिंग करनी होती है। खर्ची देने वाले दुकानदार को छूट होती है कि वह अपनी मर्जी से सैंपलिंग के लिए खाद्य सामग्री दे। दुकानदार भी सैंपलिंग कराने के लिए अलग से शुद्ध खाद्य सामग्री बना कर खुशी-खुशी पैक करा देता है। हां, यदि कोई दुकानदार खर्ची देने में कोताही बरतता है तो फिर अधिकारी अपनी मर्जी से खाद्य सामग्री भरने की धमकी देते हैं, खर्ची मिलते ही सब ठीक हो जाता है। मोटी रकम चुकाने वाले, जिनमें अधिकतर नकली सोया चाप, नकली देसी घी बनाने वाले, नकली खोए की मिठाई बनाने वाले कारखानों के मालिक होते हैं उनकी तरफ तो प्राधिकरण की नजर जाती ही नहीं। अब यदि सीएम फ्लाइंग या किसी और विभाग ने छापा डाल दिया तो फिर मजबूरी में औपचारिकताएं पूरी की जाती हैं लेकिन आगे की कार्रवाई लंबित ही हो जाती है।

घटिया, नकली और मिलावटी खाद्य सामग्री बनाने वालों पर अंकुश नहीं लगाए जाने के सवाल पर जिला अभिहित अधिकारी पृथ्वी सिंह कम स्टाफ और कई जिलों की जिम्मेदारी होने का बहाना बनाते हैं। उनके अनुसार इसके बावजूद प्रतिमाह न्यूनतम पांच

शेष पेज दो पर

नगर निगम का सफाई कर्मी बना आयुक्त का एजेंट

जेई, ठेकेदारों में वसूली मास्टर के नाम से है बदनाम

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) नगर निगम में नियम क़ानून ताक पर रख अयोग्य कर्मचारियों की पद संज्ञा बदल कर उन्हें धन वसूली के लिए कमाई वाले पद पर तैनाती दी जाती है। सफाईकर्मी के पद पर भर्ती हुए प्रेमचंद को नियम तोड़ कर पुस्तकालय अनुचर बनाया गया। अब पद तो उसका पुस्तकालय अनुचर यानी चपरासी का है लेकिन वह कथित तौर पर नगर निगमायुक्त का स्पेशल 'पीए' बन कर काम कर रहा है। बताया जाता है कि इस पद पर रहते हुए निगम में जेई, ठेकेदारों व अन्य कर्मचारियों से वसूली का काम करता है। जाहिर है वसूली गई रक़म में यह कथित 'पीए' अपने अधिकारियों को भी हिस्सा पहुंचाता है तभी तो अनुचर होने के बावजूद अहम ओहदे पर जमा हुआ है।

खुद को वर्तमान एनआईटी विधायक नीरज शर्मा के पारिवारिक सदस्य की तरह बताने वाले प्रेमचंद की नौकरी नगर निगम में वर्ष 1993 में सफाई कर्मी के पद पर लगी थी। हरियाणा नगर निगम कर्मचारी भर्ती एवं शर्तें सेवा नियम 1998 में स्पष्ट प्रावधान है कि किसी भी कर्मचारी की पदसंज्ञा नहीं बदली जा सकती। बावजूद इसके नियमों को ताक पर रख कर उस पर मेहरबान 1997 में तत्कालीन निगमायुक्त ने उसकी पद संज्ञा पुस्तकालय अनुचर कर दी। यह जानते हुए भी कि नियमानुसार पद संज्ञा नहीं बदली जा सकती इसके बावजूद सितंबर 2000 में बाकायदा इसकी सूचना सरकार को भी भेज दी गई। तत्कालीन सरकार में बैठे शहरी स्थानीय निकाय के सचिव और आला अधिकारी भी नियम विरुद्ध हुए इस काम पर चुप्पी साधे रहे।

मेहरबान अधिकारियों ने जून 2011 के शासनादेश के आधार पर प्रेमचंद की नौकरी स्थायी कर दी। नियुक्ति, पद संज्ञा बदलाव से लेकर स्थायी किए जाने तक की गई गड़बड़ियों को छिपाने के लिए प्रेमचंद के मूल दस्तावेजों की फाइल रिकॉर्ड में नहीं रखी गई, बल्कि कथित तौर पर निगमायुक्त ने अपने पास रखी हुई है। निगम के भरोसेमंद सूत्रों के अनुसार निगमायुक्त कार्यालय की सारा काम देखने वाले प्रेमचंद ने अपनी नौकरी की यह फाइल

शेष पेज दो पर

चंद्रयान 3 इसरो की मेहनत है

रुचिर गर्ग

चंद्रयान की सफलता इसरो और इस पूरे प्रोजेक्ट से जुड़े विभिन्न संगठनों उनके अधिकारी, कर्मचारी और मजदूरों की मेहनत का परिणाम है। इस बात को दोहराने की जरूरत नहीं कि इस देश में अंतरिक्ष अनुसंधान की शुरुआत किसने की और किसने इसे आगे बढ़ाया। आज चंद्रयान को लेकर एक तबका देशभक्ति के सर्टिफिकेट बांट रहा है। इस तबके को मलयाली हास्यबोध की समझ नहीं है। इसकी समझ को नफरत का ग्रहण लगा हुआ है।

एक तबका ऐसा भी है जो सड़कों पर हवन पूजन कर रहा है। वैज्ञानिकों का काम सफल हो इसके लिए कोई पूजा अर्चना करे यह उसकी आस्था है और इस पर कोई आपत्ति हो नहीं सकती, चाहे सड़क पर आस्था का प्रदर्शन करने वाले लोग कोई भी हों। लेकिन असली देशभक्त कौन हैं? भरपेट अंकिल-आंटी, जो ड्राइंग रूम में बैठकर सर्टिफिकेट बांट रहे हैं या सड़कों पर अपनी आस्था का प्रदर्शन कर रहे लोग देशभक्ति के ठेकेदार नहीं हैं!

इनसे तो चंद्रयान 3 की सफलता पर उत्साहित दो सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के लोग कहीं ज्यादा बड़े और सच्चे देशभक्त हैं। इनमें से एक रांची स्थित मेकॉन है जिसने चंद्रयान 3 के लॉन्च पैड का डिजाइन किया और दूसरी है झारखंड में ही स्थित देश की बड़ी पुरानी सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी हैवी इंजीनियरिंग कॉर्पोरेशन (एच ई सी) जिसने मैकॉन द्वारा तैयार डिजाइन के आधार पर समय से पहले मोबाइल लॉन्चिंग पैड तैयार किया।

इन्हें और इनकी देशभक्ति को सलाम इसलिए क्योंकि इन्होंने भूखे पेट रह कर

इस मिशन को समय से पहले पूरा किया, क्योंकि यह देश के गौरव की बात थी! आप यह तो जानते हैं कि अभिनेता प्रकाश राज ने कोई ट्वीट किया है लेकिन क्या आप यह जानते हैं कि इस एच ई सी के मजदूरों , कर्मचारियों और अधिकारियों को सत्रह महीने से वेतन नहीं मिला है?

क्या आपको पता है कि सार्वजनिक क्षेत्र की इस महत्वपूर्ण कंपनी को किस तरह तबाह किया जा रहा है?

दैनिक भास्कर की एक कुछ पुरानी रिपोर्ट बताती है एचईसी मजदूर यूनियन के महासचिव रमाशंकर प्रसाद ने कहा कि एचईसी अभी गंभीर आर्थिक संकट से जूझ रहा है। यहां के कर्मचारियों को 14 महीने से और अधिकारियों को 18 महीने से वेतन नहीं मिला है। कंपनी का 80 फीसदी काम बंद है। हालांकि एचईसी के पास करीब 1000 करोड़ का वर्क ऑर्डर है, लेकिन कार्यशील पूंजी न होने के कारण नए काम के लिए कच्चा माल तक उपलब्ध नहीं है। वेतन नहीं मिलने के कारण पिछले तीन साल में 100 से ज्यादा इंजीनियरों और करीब 500 कामगारों ने काम छोड़ दिया है। उन्हें बार-बार आश्वासन तो मिलता है, लेकिन वेतन नहीं। ऐसे तबाह किया जा रहा है देश की रीढ़ माने जाने वाले सार्वजनिक क्षेत्रों को। इसका जिक्र आपको अविश्वास प्रस्ताव के जवाब में आए प्रधानमंत्री मोदी के दो घंटे के भाषण में नहीं मिलेगा।

इसे जानने के लिए आपको एचईसी के कर्मचारियों की बस्तियों में जाना पड़ेगा, उनके परिजनों से बात करनी पड़ेगी और उनके उत्साह को देख कर यह समझना होगा कि खाली पेट मजदूर भी इन भरपेट लोगों से कितना बड़ा देशभक्त होता है! यह समझना होगा कि सार्वजनिक क्षेत्र इस देश की कितनी बड़ी ताकत है।

यह भी समझना होगा कि यह सार्वजनिक क्षेत्र की ही प्रतिबद्धता है कि एचईसी जैसी कंपनी के अधिकारियों, कर्मचारियों और मजदूरों ने समय से पहले चंद्रयान 3 के लॉन्च पैड को तैयार किया ताकि आज देश चांद को देख सके गर्व के साथ।

चंद्रयान 3 की सफलता की कामना पूरा देश कर रहा था। पूरा देश इसरो को सलाम कर रहा है। लेकिन कैसे भूल जाएं कि यह सफलता विज्ञान की है और विज्ञान के क्षेत्र में हिंदुस्तान की ऊंची छलांग की है। इसरो यही तो है। जो वोट के लिए उन्माद और नफरत फैलाने वाले भटका रहे हैं, समाज को कूपमण्डूक बना रहे हैं। उनको भेजिए लानत, रवीश कुमार के अंकिल-आंटियों की सद्बुद्धि के लिए कीजिए कुछ जतन और इसरो, चंद्रयान 3 की टीम, अंतरिक्ष अनुसंधान इन सबको कीजिए फिर से सलाम!

खासतौर पर मेकॉन और साथ में एचईसी के भूखे पेट मेहनती देशभक्तों को सलाम, सलाम!